अगस्त 2017 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगे को सलामी देते हुए
मानव मंदिर गुरुकुल के छात्र व छात्राएं

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

जो मिल जाता है वह व्यर्थ हो जाता है
गेटे ने कहा- मैं देखता हूं उस दुनिया को जो छूट रही है और आंख बन्द करके देख रहा हूं उस दुनिया को जो आ रही है। और मैं दोनों के बीच बड़ा खिंचा हुआ हूं। जो छूट रहा है, वह व्यर्थ था, लेकिन फिर भी उसके साथ लगाव हो गया है। जो मिल रहा है, सार्थक है, लेकिन अपरिचित है, भय भो लगता है। पता नहीं क्या होगा परिणाम? 03

वह निर्दोष दृष्टि पैदा करें जो सृष्टि की भव्यता को महसूस कर सके
तभी भीतर से गूंज सुनाई दी, सृष्टि का हर पदार्थ अपने में उपयोगी है। अगर कुछ व्यर्थ है तो वह अहंकार है जो दूसरे को बेकार समझता है। संसार में हर चीज का अपना महत्व है। वह चाहे प्राणधारी जीव हो या निष्प्राण अणु और परमाणु। एक विशालकाय संयंत्र में हर छोटे से छोटे पुर्जे का महत्व होता है। वैसे ही इस सृष्टि के संपूर्ण संतुलन में पदार्थ की लघुतम इकाई का भी अहम योगदान होता है। 04

सम्यक् आस्था
जो दुराग्रही होते हैं, वे सत्य सामने आ जाने पर भी असत्य का परित्याग नहीं करते। सत्यग्राही व्यक्ति जिधर सत्य है उधर ही अपनी मान्यता और धारणा को मोड़ दे देता है। दुराग्रही जिधर उसकी अपनी मान्यता और धारणा है, उसमें सत्य को तोड़-मरोड़कर बैठाता है। पूर्वाग्रही व्यक्तियों की आस्था उस समय डोल उठती है, जब कोई नवीन तथ्य या सत्य सामने आता है। 09

जीवन आकाश के इंद्रधनुष हैं श्रीकृष्ण
कृष्ण के इतने सारे रंग हैं, इतने सारे रूप हैं, इतने सारे अर्थ हैं कि उन्हें संपूर्णता से लोग समझ ही नहीं पाते। यहां तक कि जिन लोगों को माना जाता है कि वह कृष्ण को समझने वाले रहे, कृष्ण के नजदीक रहे वह भी संपूर्णता में कृष्ण को नहीं समझ सके। कृष्ण विविध रंगों के कोलाज हैं। कृष्ण इन्द्रधनुष हैं। जिनका कोई एक रंग सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। 18

संत-वाणी

नहि कषाय उपशान्तता, नहि अन्तर् वैराग्य।
सरलपणुं न मध्यस्थता, ए मतार्थी दुर्भाग्य।।

-श्रीमद् राजचन्द्र

बोध-कथा

साधु की लंगोट

एक बार द्रौपदी तड़के स्नान करने यमुना घाट पर गई। जब वह घाट पर पहुंची तो पौ फटने को थी। उनका ध्यान सहज ही एक साधु की ओर गया। वह गंगा में स्नान कर रहे थे और उनके शरीर पर मात्र एक लंगोटी थी। साधु स्नान के पश्चात अपनी दूसरी लंगोटी लेने किनारे की ओर बढ़े। मगर तभी हवा का एक तेज झोंका आया जिससे किनारे पर रखी साधु की दूसरी लंगोट थोड़ी दूर उड़ कर नदी में जा गिरी। साधु तेजी से उधर को झपटे, मगर पानी का बहाव उस लंगोट को अपने साथ बहा ले गया। संयोगवश साधु ने जो लंगोटी पहनी थी, वह भी फट गई। अब साधु सोच में पड़ गए कि वह अपनी लाज कैसे बचाएं। थोड़ी देर में सूर्योदय हो जाएगा और घाट पर भीड़ भी बढ़ जाएगी। कुछ और उपाय न देख साधु तेजी से पानी के बाहर आए और झाड़ी में छिप गए। यह सब कुछ द्रौपदी देख रही थीं। वह साधु के पास गईं और अपनी साड़ी आधी फाड़ कर उन्हें देते हुए बोलीं- 'मुनिवर, मैं अपकी परेशानी समझ गई। इस वस्त्र से अपनी लाज ढक लीजिए।' साधु ने सकुचाते हुए साड़ी का टुकड़ा ले लिया और आशीष दिया, 'जिस तरह आज तुमने मेरी लाज बचाई उसी तरह एक दिन भगवान भी तुम्हारी लाज बचाएंगे।' और जब भरी सभा में चीरहरण के समय द्रौपदी की करुण पुकार नारद ने भगवान तक पहुंचाई तो भगवान ने कहा- 'कर्मों के बदले मेरी कृपा बरसती है, क्या कोई पुण्य है द्रौपदी के खाते में?' जांच की गई तो उस दिन साधु को दिया वस्त्र दान हिसाब में मिला, जिसका ब्याज भी कई गुणा बढ़ गया था। उसको चुकता करने भगवान स्वयं द्रौपदी की मदद करने पहुंच गए। दुःशासन द्रौपदी की साड़ी खींचता गया और हजारों गज कपड़ा बढ़ता गया। सचमुच इंसान जैसा कर्म करता है उसका वैसा ही फल उसे सूद सहित मिलता है।

जो मिल जाता है वह व्यर्थ हो जाता है

जिस दिन गेटे मर रहा था, तो कहते हैं वह आंख खोलकर देखता था बाहर, फिर आंख बंद कर लेता था, फिर आंख खोलकर बाहर देखता था, फिर आंख बन्द कर लेता किसी ने पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? तो गेटे ने कहा- मैं देखता हूं उस दुनिया को जो छूट रही है और आंख बन्द करके देख रहा हूं उस दुनिया को जो आ रही है। और मैं दोनों के बीच बड़ा खिंचा हुआ हूं। जो छूट रहा है, वह व्यर्थ था, लेकिन फिर भी उसके साथ लगाव हो गया है। जो मिल रहा है, सार्थक है, लेकिन अपरिचित है, भय भो लगता है। पता नहीं क्या होगा परिणाम?

जो खो जाता है, हम उसकी मांग करने लगते हैं। जो मिल जाता है, वह हमें व्यर्थ दिखाई पड़ने लगता है। कुछ भी मिल जाय तो हमें डर लगता है- पीछे लौटना चाहते हैं या आगे जाना चाहते हैं। मगर जो मिल जाए, उसके साथ राजी रहने की हमारी हिम्मत नहीं है।

रवीन्द्रनाथ ने लिखा है एक गीत, कि खोजना था परमात्मा को अनन्त-अनन्त कालों से। और बड़ा बेचैन रहता था, ओर बड़ा रोता-चिल्लाता था, और बड़ी तपश्चर्या करता था ओर कभी किसी दूर तारे के किनारे उसकी शक्ल भी दिखाई पड़ती थी, जब तक वहां पहुंचता था, तब तक वह दूर निकल जाता था। बड़ी व्याकुलता थी, मिलन का बड़ा आग्रह था। रोता, तड़पता, छाती पीटता, भटकता था। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि उसके दरवाजे पर ही पहुंच गया। सीढ़ियां चढ़ गया, दरवाजे पर तख्ती लगी थी कि यही है उसका मकान, जिनकी तलाश थी। हाथ में सांकल ले ली दरवाजे की, जन्मों-जन्मों की प्यास पूरी होने के करीब थी, ठोंकने ही वाला था सांकल कि तभी मन ने कहा कि जरा सोच ले, अगर परमात्मा मिल ही गया तो फिर तू क्या करेगा? अब तक तू उसको खोजता था और वह आखिरी खोज है और अगर मिल हो गया, फिर तू क्या करेगा? फिर तेरे होने का क्या अर्थ है?

रवीन्द्रनाथ ने बड़ी मीठी कविता लिखी है- लिखा है कि धीरे से सांकल मैंने छोड़ दी कि कहीं आवाज न हो जाए, कहीं वह बाहर ही न आ जाए, कहीं वह आकर आलिंगन में ही न ले ले कि आ, बहुत दिन से खोजता था, अब मिलन हो जाए। जूते हाथ में निकाल लिए, कहीं सीढ़ियों से लौटते वक्त आवाज न हो जाय और फिर मैं जो भागा हूं, तो मैंने लोटकर नहीं देखा।

अब मैं फिर खोज रहा हूं। अब मैं पूछता हूं लोगों से कि कहां है उसका मकान? और मुझे उसका मकान पता है। और अब मैं जगह-जगह गुरुओं से पूछता हूं कि तुम्हारे चरण में आया हूं। और मुझे उसका रास्ता पता है। और कभी भूल-चूक से भी उसके घर के पास से मैं नहीं गुजरता हूं, क्योंकि अगर वह मिल ही जाय तो फिर?

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

❍ रुचि आनंद

वह निर्दोष दृष्टि पैदा करें जो सृष्टि की भव्यता को महसूस कर सके

राजा जनक के पास शुकदेव ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने दक्षिणा देनी चाही। जनक ने दक्षिणा के रूप में वह चीज मांगी जो बिल्कुल व्यर्थ हो।

शुकदेव बहुत प्रसन्न हुए कि ऐसी चीजों से तो धरती भरी पड़ी है, लेकिन जब वह बाहर निकले और व्यर्थ चीजों की खोज करने लगे तो चकरा गए। जिस-जिस को व्यर्थ समझा, उसी ने अपना महत्व बता दिया। मिट्टी ने कहा, धरती का सारा वैभव और संपदा मेरे गर्भ में ही मौजूद है। पत्थर ने कहा, मैं विशालकाय पर्वतों में हूं, जो पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों, नदी-नालों को धारण किए हुए है। आलीशान भवन और घर भी मुझसे ही बनते हैं। कूड़े-कचरे से आवाज आई कि जिस अन्न, फल-सब्जी पर संसार जीवित है, वह मुझसे ही प्राण पाते हैं।

एकांत में बैठकर शुकदेव सोचने लगे, जब गली में पड़ी मिट्टी, पत्थर, गंदगी के ढेर इतने मूल्यवान हैं तो इस धरती पर व्यर्थ क्या है। सोचते-सोचते आत्मस्थ हो गए। तभी भीतर से गूंज सुनाई दी, सृष्टि का हर पदार्थ अपने में उपयोगी है। अगर कुछ व्यर्थ है तो वह अहंकार है जो दूसरे को बेकार समझता है। संसार में हर चीज का अपना महत्व है। वह चाहे प्राणधारी जीव हो या निष्प्राण अणु और परमाणु। एक विशालकाय संयंत्र में हर छोटे से छोटे पुर्जे का महत्व होता है। वैसे ही इस सृष्टि के संपूर्ण संतुलन में पदार्थ की लघुतम इकाई का भी अहम योगदान होता है। उसको न समझने के कारण ही हम अनेक बार अपने जीवन-धारण, मनोरंजन-प्रसाधन और कुलीन सभ्यता के नाम पर लघु प्राणधारियों, पेड़-पौधों और कीट-पतंगों को तुच्छ और व्यर्थ समझ बैठते हैं।

यह संपूर्ण सृष्टि अपने में एक परिवार है। एक जल-कण से लेकर महासागर तक, एक रजकण से लेकर हिमालय की पर्वतमालाओं तक, एक सूक्ष्मतम जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी तक यह परिवार विस्तृत है। इनमें से न कोई छोटा है न कोई बड़ा। सब एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं। सबकी अपनी-अपनी विशेषताएं और सक्षमताएं हैं। हमें भी इस दृष्टि-बोध के साथ चलना होगा। अगर इसके विपरीत अपने अहंकार पर सवार होकर हम औरों को तुच्छ और व्यर्थ समझने की नजर विकसित करेंगे तो न केवल ये धूल-कण, मक्खी-मच्छर, कीड़े-मकौड़े, सांप-बिच्छू ही हमें तुच्छ लगेंगे, एक दिन मनुष्य भी व्यर्थ लगने लगेगा।

तब अपना जीवन भी अर्थहीन लगने लगे तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसलिए आवश्यक है कि हम वह निर्दोष दृष्टि पैदा करें जो इस सृष्टि-जीवन की भव्यता, उसकी उपयोगिता का अनुभव कर सके। हर लघुतम और विराट के बीच विराजमान सापेक्ष संतुलन की पहचान कर सके। उसी दिन मनुष्य के जीवन को नया अर्थ मिल सकेगा।

<u>खुद को चारदीवारी में बांध लें तो हम सत्य को उपलब्ध नहीं होते</u>

यह दावा करना उचित नहीं होगा कि हर विचार अपने आप में पूर्ण होता है। अगर ऐसा होता तो विचार की न तो परंपरा आगे बढ़ती और न नई धारा विकसित होती। विचार हमेशा सतत चिंतन की मांग करता है। उसे जितना अनुभव की कसौटी पर कसा जाएगा, वह उतना ही निखरकर सामने आएगा। उसका न आदि है, न अंत। विचार अगर खेमों में विभक्त होता है तो तय मानिए कि वह स्वतंत्र नहीं है। वह सर्वग्राह्य होने से विमुख तो हो ही जाएगा, उसकी अकाल-मृत्यु भी हो जाएगी।

यह सच है कि हर विचार की अपनी एक धारा बन जाती है। उसे कोई महावीर, बुद्ध की विचारधारा कहता है तो कोई उसे गांधी, आंबेडकर का नाम देता है। इसका सीधा मतलब है कि जिस विचार में जीवन और संसार को संवारने की क्षमता और चिंता होती है, वही कालजयी धारा कहलाती है। लेकिन आज की स्थिति में एक सवाल तेजी से उठ रहा है कि हम विचार की लड़ाई लड़ रहे हैं या अपने-अपने आग्रहों की। आज कोई भी एक उकसाने वाला बयान देता है और समाज तथा देश उसमें उलझ जाता है। असिलयत यह है कि इस बयान को हम विचार मान लेते हैं और इसे वैचारिक लड़ाई साबित करने में जुट जाते हैं। इससे समाज में एक डर कायम हो जाता है और लोग एक-दूसरे को संदेह और दुश्मनी के भाव से देखने लगते हैं।

इसी डर से आग्रह पैदा होते हैं, जो हालात को भयावह बनाते हैं।

हम यह भूल जाते हैं कि 'विचार' कभी किसी पर आक्रमण नहीं करता, न किसी को आहत करता है। वह सिर्फ बहस के लिए प्रेरित करता है। इससे जीवन का नया रास्ता खुलता है। आक्रमण की कोशिश हमेशा 'आग्रह' की तरफ से होती है। भगवान महावीर ने जोर देकर कहा कि विचार कभी आग्रहों से बंधा हुआ नहीं होता है। लेकिन आज का जो दृश्य-परिदृश्य है, वह बताने के लिए काफी है कि ज्यादातर लोग आग्रही ही नहीं, दुराग्रही होते जा रहे हैं।

झूठ को भी दुराग्रह के बल पर सच साबित करने की होड़ मची हुई है। विचार कभी भी सीमा में नहीं बंधता है। जो अपने को चारदीवारी में बांध लेता है, वह कभी सत्य को उपलब्ध नहीं हो सकता है। जैसे बंधा पानी सागर को उपलब्ध नहीं हो सकता। पानी चलता रहे, सागर बन जाता है। विचार गतिशील रहे, सत्य बन जाता है। लेकिन हमारी स्थिति कुएं के मेढक जैसी हो गई है, जो इस किनारे से उस किनारे तक छलांग मारकर समझता है कि उसने पूरी दुनिया जीत ली, जिसे यह पता नहीं होता कि कुएं से बाहर भी कोई दुनिया है। दरअसल हम सागर की अनंतता को देखने की जगह कुएं की लंबाई-चौड़ाई पर अपना विश्वास व्यक्त कर रहे हैं। यह या तो ज्ञान का अभाव है या अहंकार के प्रति निष्ठा है। दोनों ही स्थितियां मनुष्य विरोधी हैं।

कविता

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

बाहर रिमझिम-रिमझिम सावन बरस रहा है,
फूल-फूल मुरझाया गुलशन हरस रहा है,
सूना-सूना कोना मेरे प्यासे मन का,
बूंद-बूंद के लिए युगों से तरस रहा है।

सम्यक् आस्था

❍ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

दर्शन मीमांसा

'यथार्थ दृष्टि सम्यक् दर्शनं'- यथार्थ दृष्टिकोण का नाम सम्यक् दर्शन है। हमारे पूर्वाचार्यों ने सम्यक् दर्शन का बहुत बड़ा महत्त्व बताया है। यहां तक कि चारित्र-भ्रष्ट व्यक्ति की तो फिर भी मुक्ति हो सकती है, लेकिन दर्शन-भ्रष्ट (सम्यक्त्व-भ्रष्ट) व्यक्ति की मुक्ति कभी भी संभव नहीं। इस वाक्य से स्पष्ट है कि सम्यक् श्रद्धा की जीवन में क्या स्थान रहा है।

जानना एक बात है और उस पर आस्था टिकाना दूसरी बात है। ज्ञान और चारित्र के बीच की कड़ी श्रद्धा है। केवल जानने से कुछ परिणाम आने वाले नहीं, तो केवल आचरण और क्रिया से भी कुछ निष्पत्ति आने वाली नहीं है।

किसी तथ्य को जानकर आस्थापूर्वक उसका प्रयोग करने से ही सुखद परिणाम आता है।

मूर्ख वैद्य द्वारा अज्ञानी रोगी की चिकित्सा का अगर सुपरिणाम नहीं आता तो आस्थाहीन चिकित्सक द्वारा श्रद्धा शून्य रोगी का स्वस्थ होना तो नितान्त असंभव है।

आस्था से लगाई गई रेत की चुटकी भी भयंकर बीमारियों का अन्त कर देती है। अनास्था से ली गई कीमती दवा भी कोई परिणाम नहीं लाती।

बच्चा अपने अभिभावकों से जो कुछ निर्माणकारी बातें सीखता है, एकमात्र आस्था और विश्वास के बल पर ही। आस्था के बिना कोई किसी की बात मान ही नहीं सकता, अपनाना तो दूर की बात है।

आज हमारे सामने एक गंभीर उलझन है कि अनेक मार्ग, अनेक दिशादर्शन, नाना प्रकार के तत्त्वों का विश्लेषण, विविध साधना-पद्धतियां-व्यक्ति किस-किस को अपनाए और किस-किस को छोड़े? यह एक व्यवहार की गहनतम कठिनाई है। विश्व की विविधता मिटने वाली नहीं है। अनेक चिकित्सा पद्धतियां प्रचलित हैं- आयुर्वेदिक, एलोपैथिक, होम्योपैथिक,

बायोकेमिक, नेचरोपैथिक आदि। लेकिन चिकित्सा कराने वाले के लिए यह आवश्यक है कि वह जांच करे कि कौन सी पद्धति श्रेष्ठतम व उसके अनुकूल है।

यह सब स्वयं के ज्ञान पर निर्भर करता है। जो स्वयं जानकार नहीं होता उसको कोई भी धोखा दे सकता है और कभी-कभी वह हित के बदले अहित भी कर सकता है। क्योंकि ज्ञान-शून्य श्रद्धा भी अन्ध-श्रद्धा हो जाती है।

उदाहरणों के स्तर पर-

एक ग्रामीण व्यक्ति के पेट में दर्द था। उसके मित्र ने उसे सलाह दी कि वह जामुन के फल खाए। वह जामुन के फल के नाम, रंग और स्वाद से अनजान था। उसका मित्र उसे अपने जामुन के बाग में ले गया ओर कहा कि तुम वृक्ष से जामुन तोड़कर क्या करोगे? कहीं कच्चे ही तोड़ डालोगे, अतः जो जामुन वृक्षों से स्वतः झड़े हुए हैं, इन्हें चुनकर खा लेना, तब तक मैं अपना एक कार्य करने जाता हूं। ग्रामीण ने पूछा- जामुन कैसे होते हैं? मित्र ने बताया- जो काले-काले चमकदार हों और बेर जितने बड़े हों वे सब जामुन हैं। मित्र निर्देश देकर चला गया। ग्रामीण बड़ा श्रद्धाशील व्यक्ति था। उसने मित्र की बात पर पूर्ण आस्था रखते हुए जामुन चुनने शुरू किए। जामुन के वृक्षों के नीचे जामुन के फलों के बीच कुछ जुंजले भी थे, जो ठीक देखने में जामुन जैसे ही लगते थे। उस ग्रामीण ने दो-चार जामुन खाए, इस बीच एक जुंजले को उठाया। जुंजला चूं-चपड़ पर बुलबुलाने लगा। ग्रामीण बोल उठा- 'चूं' कर चाहे 'ऊ' कर, काले-काले सब खाऊंगा। और वह खा भी गया। यह सब उसने बड़ी निष्ठा से किया, पर ज्ञान नहीं था। लाभ के बदले नुकसान हो गया। अतः सम्यक् दर्शन के यथार्थ अर्थ को समझना जरूरी है।

सम्यक् दर्शन अर्थात् 'यथार्थ श्रद्धा'। दर्शन शब्द का अर्थ देखना भी है। दर्शन सामान्य ज्ञान को भी कहते हैं। पर यहां दर्शन शब्द का अर्थ है आस्था। केवल दर्शन शब्द ही आता तो वह आस्था का सूचक था, फिर चाहे वह आस्था अन्धास्था हो, गलत तत्त्वों पर आस्था हो, या आग्रही आस्था हो, लेकिन जैन दर्शन में रत्नत्रयी में जो दर्शन है उसके पूर्व में सम्यक् शब्द और जुड़ा है। इसका फलित होता है- किसी सम्यक् तत्त्व पर सम्यक् जानकारी पूर्वक सम्यक् पद्धति से की गई आस्था।

सत्यक् श्रद्धा जितनी सत्याग्रही है उतनी सत्यग्राही भी है। सम्यकृ श्रद्धालु को ज्यों ही भान हुआ कि मैंने जिसको सम्यक् समझ रखा है वह वास्तव में सम्यक् नहीं है, सम्यक् कुछ दूसरा है। वह तत्काल अपने गृहीत को छोड़कर दूसरे यथार्थ तत्त्वों को स्वीकार कर लेता है।

कुछ व्यक्ति अपनी पूर्व-धारणाओं को

छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। सत्य-ग्रहण में उनका दृष्टिकोण ऋजु नहीं है। जो दुराग्रही होते हैं, वे सत्य सामने आ जाने पर भी असत्य का परित्याग नहीं करते। सत्यग्राही व्यक्ति जिधर सत्य है उधर ही अपनी मान्यता और धारणा को मोड़ दे देता है। दुराग्रही जिधर उसकी अपनी मान्यता और धारणा है, उसमें सत्य को तोड़-मरोड़कर बैठाता है। पूर्वाग्रही व्यक्तियों की आस्था उस समय डोल उठती है, जब कोई नवीन तथ्य या सत्य सामने आता है। ऐसी लचीली आस्था से मनुष्य का कौन-सा भला होने वाला है। आस्था होनी चाहिए-सम्यक्, सुदृढ़ और सावकाश। अर्थात् यथार्थ प्रलोभनों में सुदृढ़ रहने वाली और सत्य सामने आते ही स्वीकृति का अवकाश रखने वाली आस्था से ही मनुष्य का कल्याण होता है। हमारे पूर्वाचार्यों ने रत्नत्रयी के लक्षण, दूषण ओर भूषण बताए हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की निरतिचार आराधना वही व्यक्ति कर सकता है जो इस लक्षणों, दूषणों और भूषणों में हेय को छोड़ता है और उपादेय को ग्रहण करता है।

सम्यक्त्व के लक्षण पांच हैं- शम-उपशमभाव, संवेग-मोक्षाभिलाषा, निर्वेद-विरक्ति, अनुकम्पा-दया, आस्तिक्य -अटल-आस्था।

'शान्त हैं आवेग सारे, शान्ति मन में व्याप्त है।
मुक्त होने की हृदय में प्रेरणा पर्याप्त है।।
वृत्ति में वैराग्य, अन्तर्भाव में करुणा विमल।
अटलआस्था- ये सभी सम्यक्त्व के लक्षणसबल।।'

सम्यक्त्व के दूषण पांच हैं- शंका, कांक्षा, विचिकित्सा, परपाषण्डप्रशंसा और परपाषण्डसंस्तव।

इसी प्रकार सम्यक्त्व के भूषण आठ हैं- निःशंकित, निःकांक्षित, निःचिकित्सत, अमूढ दृष्टि, उपवृहंण, स्थिरीकरण, वात्सल्य, प्रभावना।

'लक्ष्य में स्थिरता निरन्तर भक्ति-भावितभावना।
धर्म शासन की करूं निःस्वार्थ सतत प्रभावना।।
जैन-तत्त्व-ज्ञान में हो सहज जिज्ञासा प्रबल।
संघ-सेवा, ये सभी सम्यक्त्व के भूषण अमल।।

तत्त्व को जान लेने पर भी जहां सन्देहशीलता रहती है, वहां कोई निष्पत्ति नहीं आती। एक प्राचीन कथानक ने अनुसार एक साधु को उसके गुरू ने बताया कि नमस्कार-महामंत्र में एक ऐसा जादू है कि इसका उच्चारण करके एक वृक्ष पर चढ़ जाओ और फिर वहां से कूदकर जहां चाहो, वहां जा सकते हो। गुरू की बात सुनकर शिष्य जंगल में गया। एक वृक्ष के ऊपर चढ़कर नमस्कार-महामंत्र का उच्चारण कर ज्यों ही छलांग लगाने को होता, मन में शंका होती कि कहीं नीचे न गिर जाऊं ओर वह छलांग नहीं लगा पाता। इतने में एक व्यक्ति दौड़ा-दौड़ा आया जो राजमहल में चोरी करके आ रहा था और उसके पीछे पुलिस भागी आ रही थी। उसने मुनि से पूछा- आप

ऐसे क्या कर रहे हैं? मुनि ने कहा- गुरूजी ने बताया है कि जो व्यक्ति नमस्कार-महामंत्र का स्मरण कर वृक्ष पर से छलांग लगाकर जहां चाहे उड़ सकता है, पर मेरे मन में झिझक है, कहीं ऊपर न उड़कर नीचे गिर गया तो पड्डी-पसली टूट जाएगी।

उस चोर ने मुनि से कहा- आप वृक्ष के नीचे खड़े होकर देखें और मैं महामंत्र को बोलकर छलांग लगाता हूं। यदि मैं सफल हो जाऊं तो फिर आप भी लगा लेना।

चोर ने सोचा- अगर नीचे गिर पड़ा तो मरना तो वैसे भी है, पुलिस जो पीछे आ रही है और उड़ सका तो बचाव हो जाएगा।

दृढ़ निश्चय के साथ छलांग लगाई और वह मनःईप्सित स्थान पर चला गया तथा वह मुनि जिसके पास मंत्र था, ज्ञान था, शक्ति थी, पर दृढ़ निश्चय नहीं था, उस वृक्ष के नीचे खड़ा रहा और पुलिस ने आते ही उसे चोर समझकर गिरफ्तार कर लिया।

यह है श्रद्धा का चमत्कार।

लधु-कथा

नया मकान

कई साल किराये पर रहने के बाद आज उसने नया मकान खरीद ही लिया था।

'चलो आज ईश्वर की कृपा से घर भी बन गया। माँ ने प्रसन्नता जाहिर की।

सबके बड़े-बड़े कमरे थे। माँ का कमरा भी काफी बड़ा था।

'हाँ, इस कोने में मैं अपना मन्दिर बनाऊँगी' माँ ने कमरे के एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा।

बीवी भी अपनी विशाल और अति सुंदर रसोई देख कर खुश थी। कुछ दिन बाद पति-पत्नी को लगा कि रसोई पकाने से रसोई खराब हुई जाती है और पूजा करने के कारण माँ वाले कमरे की छत काली पड़ी जा रही है। समस्या का हल निकाला गया। क्यों ना रसोई गैरेज में ही पकाई जाए और माँ का मंदिर भी वहीं बना दिया जाए।

रसोई गैरेज में पकने लगी और मंदिर भी माँ की इच्छा के विरूद्ध गैरेज में स्थापित कर दिया गया।

अब रसोई साफ-सुथरी थी और माँ का कमरा भी मंदिर बाहर लगाने से और बड़ा लगने लगा था।

बड़े घर में आने पर माँ को बेटे-बहू का दिल छोटा-छोटा दिखने लगा था।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

❍ डॉ. विनीता गुप्ता

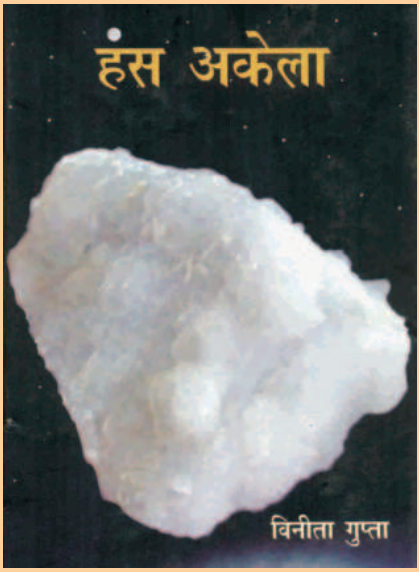

गतांक से आगे-

सन् उन्नीस सौ बावन जुलाई का महीना। सरदारशहर पर बादल घिर आए थे। सुहावने मौसम में भोर से ही हजारों लोग आचार्यश्री की अगवानी के लिए हमेशा की तरह शहर से दूर पहुँचे थे। अगवानी के लिए पहुँचने वालों में बालक रूपा भी था। बादलों के बीच सूरज ताक-झाँक करने लगा। दस बजने को थे। प्रतीक्षारत श्रद्धालुओं में कुछ हलचल हुई। धीरे-धीरे हलचल तेज हुई। रूपा समझ गया कि श्रद्धालुओं को आचार्यश्री की एक झलक मिल गयी है। रूपा भीड़ को धकेलते हुए आगे पहुँच गया। दूर से टकटकी बाँधे निहारता रहा युग-प्रवर्तक के तेजी से बढ़ते कदमों को। अद्‌भुत गति और उस गति में अनुशासन की छाप। आचार्यश्री के साथ अन्य संतों और साध्वियों के कदम सरदार शहर की ओर बढ़ रहे थे। श्रद्धालुओं में आकुलता बढ़ती जा रही थी। रूपा के लिए यह कोई पहला अनुभव नहीं था। लेकिन नवीन अवश्य था।

सरदारशहर के श्रद्धालुओं में संत-साध्वियों का समूह पहले आगे बढ़ा। फिर नगर के प्रतिष्ठित जन, जिनमें एक रूपा के पिता जयचंदलाल भी थे। रूपा इन सबमें पीछे छूट गया था। अब उसे सिर्फ मुनि सोहनलाल और उनके पीछे श्रद्धालुओं का समवेत स्वर में गाया गीत सुनाई दे रहा था-

सोने रो सूरज उगियो म्हारो खिल रह्‌यो भाग-सुभाग हो...।
बधावो गावो गुरूवर पधार्‌या म्हारे शहर में...।

x x x

गधैया जी के नोहरे में आचार्यश्री के प्रवास से पूरा शहर आध्यात्मिक प्रभामंडल से स्नात हो गया था। इधर रूपा के मन में घमासान शुरू हो गया था कि कैसे आचार्यश्री के पास पहुँचूं और उनके सामने अपने मन की बात रखूं। एक दिन रूपा को यह अवसर मिल ही गया। प्रतिक्रमण के बाद संत-जन अपनी अन्य चर्या में जुट गए। अर्हत वंदना में अभी समय था। आचार्यश्री के आस-पास कोई नहीं था। दूर एक नन्हा-सा दीप जल रहा था। विद्युत का प्रयोग वे उन दिनों करते नहीं थे। अवसर पाकर रूपा सीधा आचार्यश्री के पास पहुँच गया। चरण-वंदना के बाद हिम्मत जुटायी और बोला- 'आचार्यश्री मैं संन्यासी जीवन की दीक्षा लेना चाहता हूँ। आप मुझे दीक्षा देंगे न।'

आचार्यश्री ने अपने सामने खड़े तेजस्वी किशोर बालक को सिर से पॉव तक देखा। इससे पहले उन्होंने इसे कभी नहीं देखा था। वे जानते थे कि ऐसी इच्छा व्यक्त करने वाला अपनी मंशा में बहुत दृढ़ होता है, किन्तु परिवार के लोग नहीं चाहते कि उनका बेटा दीक्षा लेकर वीतरागी जीवन व्यतीत करे। आचार्य तुलसी ने बालक का मन खंगालने और दूसरी जानकारियां लेने के लिए पूछा-

'तुम दीक्षा क्यों लेना चाहते हो?'

रूपा ऐसे प्रश्नों के लिए तैयार था- 'आचार्यश्री संसार में मेरा मन नहीं लगता। मेरा मन साधना और भक्ति में है। इसलिए मैं दीक्षा लेकर साधना और भक्ति के पथ पर चलना चाहता हूं। आचार्यश्री संसार में रहते बहुत झूठ बोलना पड़ता है। छल करना पड़ता है। मुनि बन जाऊंगा तो शायद इससे दूर हो जाऊंगा।'

आचार्य श्री ने इस संबंध में और ज्यादा बात करने की बजाय रूपा से पूछा-

'तुम्हारा नाम क्या है? तुम किसके बेटे हो?'

रूपा ने परिचय देते हुए कहा-

'आचार्यश्री मेरा नाम रूपचन्द्र है। मेरे पिता हैं श्री जयचंदलाल। माँ पाँची देवी हैं। दादा भीखम चंद जी ...' रूपा और कुछ बोलता इससे पहले ही आचार्यश्री ने हाथ के इशारे से उसे बात खत्म करने को कहा। आचार्यश्री रूपा की पारिवारिक पृष्ठभूमि से परिचित थे। रूपा आचार्यश्री की ओर अपने प्रश्न के उत्तर के लिए देखता रहा। आचार्यश्री ने कहा-

'पहले अपनी इच्छा अपने माता-पिता को बताओ। फिर सोचेंगे।'

आचार्यश्री के चरणों में प्रणाम निवेदित कर बालक रूपा मन में ऊहा-पोह लिए घर की तरफ लौटा। उस दिन मुनि सोहनलाल से भी नहीं मिला।

काफी मंथन के बाद पाँची देवी ने नियति को स्वीकार कर लिया था। नोहरे से लौटने के बाद जब रूपा ने बताया कि उसने

आचार्यश्री के सामने अपने मन की बात कह दी, तो पाँची देवी के चेहरे पर कोई उद्‌वेग नहीं था। एक असीम शांति और ओज था। पाँची देवी ने कहा, 'ठीक है तू दीक्षा ले रहा है। अगर तेरा भाई माणक छोटा नहीं होता तो मैं भी तेरे साथ संन्यास ले लेती। खैर! इस बारे में तू अपने पिता जी से बात करले।' पाँची देवी स्वयं उस दीक्षा-पथ पर जाना चाहती थीं। लेकिन अभी पारिवारिक दायित्व निभाने थे।

रूपा अपने मन की बात माँ से कह चुका था। उसे स्वीकृति भी मिल गई थी। लेकिन पिताजी से कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उसने माँ से कहा, 'माँ, पिताजी से आप ही कह देना। मुझे तो डर लगता है।' वह अब इस काम में और देरी नहीं करना चाहता था। उसने मन कड़ा कर हिम्मत जुटायी और तय कर लिया कि अगर माँ ने नहीं कहा तो कल सुबह ही वह पिता जी से सब बात कह देगा।

अगली भोर रूपा जल्दी उठ गया। इससे पहले कि जयचंद लाल गौशाला जाते, रूपा मुँह-हाथ धोकर तैयार हो गया गौशाला जाने के लिये। उसे तैयार देख जयचंदलाल को हैरानी हुई।

'अरे, रूपा तू रोज तो सोकर नहीं उठता। आज इतनी जल्दी एकदम तैयार।' जयचंदलाल ने पूछा-

इससे पहले कि रूपा कोई उत्तर देता, पाँची देवी बोल पड़ी, 'सुनिए, जरा भीतर आना। कुछ कहना है।'

जयचंदलाल का ध्यान पत्नी की ओर मुड़ गया।

'हाँ, क्या बात है, जल्दी करो। वहां गायें इंतजार कर रही हैं।'

'अपना रूपा दीक्षा लेकर साधु बनना चाहता है। उसने आचार्यश्री से निवेदन भी कर दिया है।' पाँची देवी एक साँस में ही बोल गयीं।

जयचंदलाल का माथा सुबह-सुबह ठनक गया। उन्हें रूपा की सनक और जिद का अंदाजा था। उन्होंने भीतर कमरे से आवाज दी- 'रूपा' आवाज में खासी कड़क थी। उन्होंने सोच लिया था कि अब इसकी यह जिद नहीं चलने देंगे। जैसे-तैसे पतंग उड़ाना छुड़ाया, अब यह संन्यासी बनने की सनक सवार हो गई।

तौलिया से मुँह पोंछता, कमीज के बटन ठीक करता रूपा कमरे में भीतर पहुँचा। जयचंदलाल की त्यौरियां सुबह-सुबह चढ़ी हुई थीं-

'एक बात कान खोल कर सुन ले रूपा। तेरी ये बातें अब नहीं चलने वालीं। ध्यान रख, मैं तुझे साधु के बाने में नहीं देखना चाहता। चाहे अपनी जिद पूरी करने के लिए तू जान भले ही दे दे।' इतना ही कहा जयचंदलाल ने और तेज कदमों से गौशाला की ओर निकल गये। रूपा को अपनी बात

कहने का कोई मौका नहीं मिला। वह सीधे बच्चों वाले कमरे में आ गया। भीतर खासी उथल-पुथल थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि पिताजी उसके हर काम का विरोध क्यों करते हैं। पतंग उड़ाना उन्हें अच्छा नहीं लगता था, उसे छुड़वा दिया। तबला बजाना चाहता था, वह नहीं ला कर दिया। अब संन्यास दीक्षा लेना चाहता हूँ, इसमें क्या बुराई है? वह खुद भी तो साधु-संतों की इतनी सेवा करते हैं। उन्हें पूज्य मानते हैं। घर में उनका आगमन कितना हर्ष का विषय होता है। उनसे आशीर्वाद लेने को पूरा घर आतुर रहता है। रूपा को लगा कि पिताजी को तो मेरी हर बात का विरोध करने और डाँटने की आदत है, लेकिन मैं संन्यास दीक्षा अवश्य लूंगा।

पाँची देवी घर का काम करते हुए लगातार सोच रही थीं कि अब अवश्य कोई तूफान आने वाला है रूपा की वजह से। उधर गौशाला में जयचंदलाल गायों को नहलाते-धुलाते लगातार रूपा के बारे में ही सोच रहे थे। वे मन ही मन रूपा की प्रतिभा के कायल थे। उसकी समझ भरी बातें उन्हें भाती थीं। जब कभी मुनि सोहनलाल उसके विषय में बात करते तो अपने पुत्र के लिए गर्व से उनकी छाती फूल जाती। उनकी दृष्टि में रूपा के भीतर सब ठीक था, सिर्फ कुछ फिजूल की सनकों के। अब यह साधु बनने की नई सनक जाने कहां से सवार हो गई।

रूपा पिताजी के प्रखर स्वभाव को जानता था। उनको मनाना टेढ़ी खीर थी। रूपा ने अपनी रणनीति बनानी शुरू कर दी थी। उसे पता था कि पिताजी पर किसका प्रभाव ज्यादा है। उसका लक्ष्य था मुनि सोहनलाल और कन्हैयालाल दूगड़ से पिता जी को कहलवाना। उसने रणनीति बनाई और उसे कार्यरूप देना शुरू कर दिया। वह तैयार होकर जल्दी ही विद्यालय की ओर चल दिया। न जाने क्यों उसे बार-बार लग रहा था कि इस बार वह अवश्य अपने लक्ष्य को पा लेगा। विद्यालय की ओर जाते रूपा का हर कदम उसके दृढ़संकल्प का साक्षी था। दिन भर विद्यालय में मन के भीतर उधेड़बुन चलती रही। छुट्टी होने पर घर लौटा और किताब ले कर बैठ गया। माँ ने खाने के लिए बुलाया तो अनमना-सा हो उठा। थाली परोसी हुई थी, उसमें रोटी, गट्टे की सब्जी, लौकी की सूखी सब्जी और साथ में एक कटोरी दही था। बड़ी देर तक थाली में रखी चीजों को निहारता रहा। भूखा होने के बावजूद उसे जैसे इन सब चीजों से अरुचि हो गई थी। पन्द्रह मिनट तक उसने कुछ नहीं खाया। बस निहारता रहा। सामने रखी थाली उसे बड़े शून्य की तरह लग रही थी, जिसमें रोटी की शक्ल में एक और शून्य। दोनों कटोरियां दो छोटे-छोटे शून्यों जैसी लग रही थीं। वह

शून्य से शून्यों तक यात्रा कर रहा था। यह शून्य ही तो ब्रह्मांड है। इस शून्य में ही समस्त सृष्टि है, ईश्वर है।

'रूपा, तूने अभी तक खाना शुरू नहीं किया,' माँ की आवाज से उसकी विचार-शृंखला टूट गई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब तक पाँची देवी एकदम पास आ गईं। माँ का अंतर्मन रूपा की मनःस्थिति को अच्छी तरह पढ़ सकता था कि वह क्या सोच रहा है। और वे रूपा की जिद को भी अच्छी तरह जानती थीं। माँ को पास आया देख रूपा थाली छोड़ उठने लगा। पाँची देवी ने प्यार से उसे बैठाया।

वह अनमना-सा बैठ तो गया, लेकिन थाली को अब भी हाथ नहीं लगाया। माँ ने दुबारा टोका तो बोला, 'जब तक पिताजी मुझे दीक्षा की अनुमति नहीं देते, मैं भोजन में दो द्रव्यों से अधिक कुछ नहीं लूँगा। मैं सिर्फ रोटी और केला ही खाऊंगा। उसके अलावा कुछ नहीं।' और रूपा थाली छोड़कर उठ खड़ा हुआ। माँ आवाज देती रहीं। उसने कोई बात नहीं सुनी और दरवाजे से सीधे बाहर गली में चला गया। पाँची देवी गली में आवाज लगाती नहीं। उन्होंने थाली ढक कर रख दी। माणक के साथ घर के दूसरे कामों में उलझ गईं।

-क्रमशः

चांद धरती पर

राजा भोज के दरबार में एक कुम्हारिन आयी। राजा ने आने का कारण पूछा। उसने कहा- जंगल में मिट्टी खोदते मेरे पति को मणियों से भरा घड़ा मिला है। उस धन के आप ही मालिक हैं। अब आप मंगवा लें। राजा के बुलाने पर कुम्हार घड़ा लेकर आया। राजा मणियों को देखकर बहुत खुश हुआ और पूछा। ये सब क्या हैं? वह बहुत चतुर था। उसने कहा- ये आकाश के तारे हैं।

राजा बोला, 'धरती पर कैसे आ गये। कुम्हार ने उत्तर दिया, ''जब आकाश का चांद धरती पर आ गया है। तब ये तारे पीछे कैसे रह सकते थे?'' कुम्हार ने राजा को चांदसे उपमित करके प्रसन्न कर लिया। राजा ने मणियों का घड़ा इनाम में कुम्हार को दे दिया। यह तरीका होता है बोलने का। एक अनपढ़ कुम्हार होते हुए भी इतनी बुद्धिमता। वरना बड़े बड़े पढ़े लिखें लोगों में भी बोलने का सलीका नहीं होता। डिग्री की पढ़ाई से भी ज्यादा महत्व रखता है अंतर का ज्ञान।

नवपद का जप

○ साध्वी मंजुश्री

हृदय पर आठ पंखुडी का कमल बनाएं। चार पंखुड़ी चार दिशाओं में और चार पंखुड़ी चार विदिशाओं में।

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरिहंताणं का ध्यान करें (मध्य में)

ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणं (पूर्व में),,

ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणं (उत्तर में),,

ॐ ह्रीं श्रीं णमो उवज्झयाणं (पश्चिम में),,

ॐ ह्रीं श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं (दक्षिण में)

ॐ ह्रीं श्रीं णमो णाणस्त (दिशाओं में)

ॐ ह्रीं श्रीं णमो दंसणस्स

ॐ ह्रीं श्रीं णमो चरित्तस्स

ॐ ह्रीं श्रीं णमो तवस्स

यह नवपद मन्त्र महान् प्रभावक मन्त्र है। सोते समय 21 बार जप करना चाहिए। 1 माला फेरें तो और भी अच्छा है।

मंगल मन्त्र

नमिऊण - असुर - सुर - गरुल - भुयंग - परिवंदिए।

गयकिलेस अरिहे, सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहूणं।'

सूचना- यह चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का मंगलाचरण है। जो अतीव प्रभावशाली है। इस मन्त्र का शुद्ध उच्चारण, शारीरिक-शुद्धिपूर्वक नित्यप्रति प्रातःकाल 21 बार जप करना चाहिए। सब प्रकार से आनन्द मंगल हो, आपत्ति संकट दूर हो।

नवाक्षरी मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हम् नमः क्षीं स्वाहा

सूचना- पहले नौ बार नवकार मन्त्र पढ़कर नौ मालाएं फेरें। निरन्तर 21 दिन तक जाप करने से सब प्रकार का राज सम्बन्धी संकट दूर हो जाता है।

प्रेमभाव वर्द्धक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं

सूचना- पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जाप करें। एक बार मन्त्र का जाप करें और नये कपड़े में एक गांठ लगा दें। इस प्रकार एक सौ आठ बार जाप करें ओर नये कपड़े में एक-सी आठ गांठ लगा दें। ऐसा करने से घर में, परिवार में, समाज में किसी के साथ कलह या अनबन हो तो प्रेम-भाव बढ़ता है।

रोग निवारण मन्त्र

ॐ णमो सव्वोसहि-पत्ताणं,

ॐ नमो खेलोसहि-पत्ताणं,

ॐ नमो जलोसहिपत्ताणं,

ॐ णमो सव्वोसहि-पत्ताणं स्वाहा।

इस मन्त्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सब प्रकार के रोगों की पीड़ा शांत हो जाती है, रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

जीवन आकाश के इंद्रधनुष हैं श्रीकृष्ण

महान दर्शनिक विश्लेषक ओशो ने कृष्ण को हंसते हुए धर्म का स्वामी कहा है। ओशो ने कृष्ण को एकमात्र ऐसा अनूठा व्यक्तित्व बताया है जो हुए तो अतीत में किंतु हैं भविष्य के। ओशो का विश्लेषण न सिर्फ अनूठा बल्कि सर्वाधिक विचारोत्तेजक और सत्य के सबसे करीब है। महान सनातन धर्म में कई अवतार हुए हैं। लेकिन कृष्ण एकमात्र पूर्णावतार हैं। कृष्ण ऐसे महानायक हैं जिनके व्यक्तित्व में सभी नायकों का नायकत्व अंतर्निहित है। हिंदू सनातन धर्म ने जीवन को हमेशा उदासी और तटस्थता से देखा है। मोह, माया के परित्याग का आह्वान किया है। जीवन से दूर वैराग्य का उपदेश दिया है। इस दुनिया से अलग कहीं सर्वगुण संपन्न दुनिया का बखान किया है। कृष्ण हमारे अकेले ऐसे महानायक हैं जो इसी दुनिया के, इसी जीवन के गीत गाते हैं। कृष्ण अकेले ऐसे विराट व्यक्तित्व हैं जो कल की बात नहीं करते आज की बात करते हैं। कृष्ण अकेले धर्मयोद्धा हैं जो हंसना सिखाते हैं, रोना नहीं। कृष्ण के इतने व्यक्तित्व हैं, कृष्ण की महानता और मेधा के इतने रंग हैं कि उन्हें किसी एक रंग से बांधा ही नहीं जा सकता। इसीलिए वे जीवन आकाश के इंद्रधनुष हैं जीवन आकाश के इतने विविध रूप, इतने विविध संकल्प और इतनी विविध भूमिकाएं न सिर्फ हिंदू माइथोलॉजी, बल्कि दुनिया की किसी भी माइथोलॉजी में नहीं मिलेंगे। कृष्ण एक साथ उत्तर-दक्षिण हैं। कृष्ण एक साथ आकाश-पाताल हैं। कृष्ण एक साथ योद्धा और योगीराज हैं। यह कृष्ण का विराट व्यक्तित्व ही है कि कहीं वह प्रेम के एक-एक धागे को जोड़कर प्रेम

का महारास रचा लेते हैं। वहीं कुरुक्षेत्र के मैदान में जीवन और प्रेम से तटस्थ होकर किसी योगी की भांति युद्धघोष का आह्वान करते हैं। कृष्ण के इतने सारे रंग हैं, इतने सारे रूप हैं, इतने सारे अर्थ हैं कि उन्हें संपूर्णता से लोग समझ ही नहीं पाते। यहां तक कि जिन लोगों को माना जाता है कि वह कृष्ण को समझने वाले रहे, कृष्ण के नजदीक रहे वह भी संपूर्णता में कृष्ण को नहीं समझ सके। कृष्ण विविध रंगों के कोलाज हैं। कृष्ण इन्द्रधनुष हैं। जिनका कोई एक रंग सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। महाभारत का कृष्ण युद्धघोष के लिए कहता है तो श्रीमद्भागवत का कृष्ण जीवन की बाल सुलभता पर मोहित है। ग्वालों और गोपियों के रास-रंग में बंधा है। कृष्ण के इतने सारे रूप हैं मगर वे किसी रूप में, वे किसी भूमिका में जीवन को नहीं नकारते। भारत के तमाम दूसरे अवतार जीवन से कटते हैं। जंगल जाते हैं ध्यान लगाते हैं और बुद्धत्व पाते हैं। कृष्ण जीवन जीते हुए बुद्धत्व हासिल करने की बात करते हैं। ओशो ने सही ही कहा है कृष्ण हमारे भविष्य हैं। कृष्ण ने द्वापर में वह सब कुछ किया जो अभी भी पूरी तरह से संभव नहीं है। कृष्ण हजारों गोपियों के प्रेमी रहे। आज का लिवइन रिलेशन कृष्ण ने द्वापर में ही जी लिया था। आज की पेचीदगियों से भरी राजनीति को कृष्ण ने महाभारत में ही सुलझा लिया था। कर-बल-छल हमारे ज्यादातार अवतार इन पूर्णताओं से या कहें इन सिद्धियों से दूर रहे। कृष्ण इन शक्तियों के पूर्णांश थे। कृष्ण बिल्कुल अलग हैं। कृष्ण आम लोगों की तरह हंसते हैं। गाते हैं। नाचते हैं। रोते हैं। इतराते हैं। लड़ते हैं। खुश होते हैं और गुस्सा भी। वे पत्थर नहीं हैं। वे आदर्शों की ठोस शिला नहीं हैं। वे धड़कते हुए दिल के जीवंत इंसान लगते हैं। महाभारत में कृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि वे शस्त्र नहीं उठाएंगे। लेकिन जब महावीर भीष्म ने कृष्ण को छका डाला तो उन्होंने प्रतिज्ञा को एक तरफ रख दिया और सुदर्शन चक्र लेकर दौड़ पड़े। यह कृष्ण की मानवीयता के निकट का वह बोध है जो उन्हें ईश्वर से कहीं बढ़कर और अतीत के बजाए वर्तमान का बनाता है। कृष्ण के यहां पाप-पुण्य का श्वेत-श्याम बंटवारा नहीं है। कृष्ण इंसानों की तरह जीते हैं आदर्शों के पुतलों की तरह नहीं। महाभारत के प्रसंग में शल्य कर्ण पर व्यंग करते हुए कहता है, 'डर गये।' तो कर्ण कहता है, 'डरते सिर्फवो नहीं हैं जो काठ के पुतले होते हैं।' कृष्ण काठ आदर्शों के पुतले नहीं हैं। वह इंसानों के उत्स हैं। कृष्ण वह सब कुछ करते हैं जो किसी भी इंसान को अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए करना चाहिए। वह

सियासत करते हैं। वह सन्मार्ग के अनुयायी हैं। लेकिन कहीं पर के लिए और किसी के भी लिए वह जड़ नहीं होते। उनमें जीवंतता रहती है। इसलिए कृष्ण आज भी प्रासंगिक हैं। भले तमाम दूसरे अवतार प्रासंगिक न रहे हों लेकिन कृष्ण आज भी जीवन के हर क्षण के लिए प्रासंगिक हैं। जीवन के हर क्षण को वे निर्देशित करते हैं। कृष्ण इसीलिए जीवंत हैं और दिनोंदिन उनकी महिमा बढ़ रही है। पूरा भारतीय धर्म नैराश्य की महागाथा है। इसीलिए कई पश्चिमी विद्वानों ने हिंदू धर्म को लाइफनेगेटिव की संज्ञा दी है। कृष्ण अकेले ऐसे धर्मध्वजा हैं जो कभी नहीं रोए। रोने के लिए नहीं रोए, जीवन की जीवंतता के हिस्से के रूप में रोए। कृष्ण हंसते हुए धर्म हैं ओशो ने यूं ही नहीं कहा। कृष्ण हमेशा हंसते रहे हैं। यही वजह है कि आज की इस अवसादग्रस्त दुनिया में कृष्ण बड़ी सार्थकता है। कृष्ण अतीत नहीं वर्तमान हैं और वर्तमान से ज्यादा भविष्य हैं क्योंकि वह धर्म आकाश के इन्द्रधनुष हैं।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

चुटकुले

1. एक महिला पुलिस स्टेशन में...
महिला- इंस्पेक्टर साहब, कब मिलेंगे मेरे पति आज 4 दिन हो गए हैं कोई खबर नहीं है उनकी।
इंस्पेक्टर- मिलेंगे मिलेंगे, जल्द ही मिल जाएंगे। देखिए, कल ही हमें हाईवे के पास से उनके मोजे मिले हैं, वो हमने अपने खोजी कुत्ते को सुंघाए हैं। बस कुत्ते के होश में आते ही हम खोज फिर से शुरू कर देंगे।

2. टीचर- न्यूटन का नियम बताओ।
स्टूडेंट- सर पूरी लाइन तो याद नहीं, लास्ट की याद है।
टीचर- चलो लास्ट की ही सुनाओ।
स्टूडेंट-.....और इसे ही न्यूटन का नियम कहते हैं।

3. डॉक्टर (पेशंट के पति से) आज कैसी तबियत है आपकी पत्नी की?
पति- ठीक है डॉक्टर आज सुबह तो थोडा लड़ी भी है।

प्रस्तुति : विनय

पानी माँ

फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट के हृदय में महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना थी। यह घटना नेपोलियन के बचपन की है। नेपोलियन जिस विद्यालय में पढ़ने जाते थे उस विद्यालय के रास्ते में एक गरीब अधेड़ उम्र की औरत की छोटी-सी झोंपड़ी थी। वह स्कूल आते-आते बच्चों को पानी पिलाती थी। इस कार्य में उसे बड़ा सुख मिलता था। इसके बदले वह बच्चों से कुछ नहीं मांगती। लेकिन बच्चे उसे स्वेच्छा से कुछ पैसे दे देते। बच्चे उसे पानी मां कहकर पुकारते थे। वह भी बच्चों को बहुत स्नेह करती थी।

उन्हीं आते-जाते बच्चों में नेपोलियन भी एक था। प्यार व स्नेह तो वह सभी बच्चों को करती थी लेकिन पता नहीं क्यों नेपोलियन के प्रति उसका विशेष अनुराग था। वह अक्सर उससे कहती- 'बेटा, मेरा मन कहता है कि तुम एक दिन जरूर बहुत बड़े आदमी बनोगे।'

उसकी इस बात पर नेपोलियन हंस देता। धीरे-धीरे समय गुजरता गया। बालक नेपोलियन अब सम्राट बन गया था।

किंतु सम्राट बनने पर भी नेपोलियन अपने मन में उस पानी मां के आत्मीय लगाव और वात्सल्यपूर्ण व्यवहार को याद करता। एक दिन वह अपने अंगरक्षकों के साथ उसी मार्ग से जा रहा था जिस पर पानी मां की झोंपड़ी थी। सहसा नेपोलियन के मन में विचार आया पता नहीं अब पानी मां हैं या नहीं! उसका आशीर्वाद सत्य होकर मेरे जीवन में उतरा है। नेपोलियन ने अपने अंगरक्षकों को वहीं रुकने का आदेश दिया और स्वयं पानी मां की झोपड़ी की ओर जाने लगा।

झोंपड़ी के करीब आकर नेपोलियन घोड़े से उतरा और अंदर गया। पानी मां बिल्कुल वृद्ध हो गई थी। उसके जर्जर शरीर ने काम करने की शक्ति खो दी थी। वृद्धावस्था के कारण उसकी आंखों की रोशनी भी कम हो गई थी।

उसकी दयनीय दशा देखकर नेपोलियन का दिल द्रवित हो उठा। उसने अत्यंत आदर के साथ कहा- 'आप तो बहुत कमजोर हो गई हैं पानी मां!' 'हां बेटा लेकिन तुम कौन हो?' अत्यंत मद्धिम आवाज में वृद्धा ने पूछा।

नेपोलियन ने उसे याद दिलाते हुए कहा- 'याद है मां, आप विद्यालय आने वाले लड़कों को पानी पिलाती थीं। उनमें एक बालक ऐसा भी था, जिससे आप बहुत अधिक स्नेह करती थीं तथा उसे महान व बड़ा बनने का आशीर्वाद भी देती थीं।'

'हां-हां बेटा याद है।' कांपती हुई आवाज में वृद्धा ने कहा।

'मां, क्या आपको मालूम है वह लड़का अब फ्रांस का राजा बन गया है?' नेपोलियन ने स्वयं को प्रकट नहीं किया।

'अच्छा बेटा! ईश्वर उसे दीर्घायु बनाए।' वृद्धा ने आशीर्वाद में हाथ उठा दिया। नेपोलियन ने अनजान बनकर उससे पूछा- 'क्या वह आपसे मिलने कभी नहीं आया?'

वृद्धा ने उत्तर दिया- 'बेटा, अब वह इतना बड़ा सम्राट बन गया है भला मुझसे मिलने का समय कहां होगा! लेकिन बेटा, मुझे उसे देखने की बड़ी इच्छा है। पर वह तो मुझे भूल गया होगा।'

वृद्धा के शरीर और आवाज में जैसे शक्ति का संचार हो गया हो। थोड़ा रुककर दुखी आवाज में उसने पुनः कहा- 'एक बार उसे देख लेती तो मेरी आंखें और मन दोनों तृप्त हो जाते।'

अब नेपोलियन से नहीं रहा गया। वह भाव-विह्वल होकर बोला- 'मां, मैं ही तुम्हारा वह बेटा हूं, जिसे तुम पानी पिलाकर आशीर्वाद देती थी। तुम्हारी बात सत्य हो गई।' कुछ रुककर नेपोलियन ने पुनः कहा- हां, आपके पास कुछ विलंब से पहुंचा... इसके लिए क्षमा चाहता हूं।'

वृद्धा के हर्ष का पारावार न रहा। नेपोलियन का माथा चूमते हुए उसने कहा- 'ओह, मैं कितनी भाग्यशालिनी हूं कि आज मेरे सामने फ्रांस का भाग्यविधाता खड़ा है। तू सचमुच महान है बेटा। दीन-दुखियों के प्रति उदारता और हृदय की विशालता के कारण ही तू फ्रांस का सम्राट बन सका। मेरी आशीष और मंगलकामना सदैव तुम्हारे साथ है।' पानी मां को बोलने की ताकत जैसे अनायास मिल गई हो। नेपोलियन रुद्ध कंठ से बोला- 'मां, आप मेरे साथ चलकर रहिए।'

'नहीं बेटा, मुझे इसी झोंपड़ी में रहने दो। तुम्हारा इतना प्यार और सम्मान ही मेरे लिए कम नहीं है।' वृद्धा ने कृतज्ञ भाव से कहा।

'ठीक है मां, मैं यहीं आपकी सेवा के लिए एक सेवक नियुक्त कर देता हूं। किसी भी चीज की आवश्यकता होने पर मुझे अवश्य याद कर लीजिएगा।' कहकर नेपोलियन ने पानी मां से विदा ली।

पानी मां का शेष जीवन नेपोलियन द्वारा प्राप्त आर्थिक सहायता के कारण अत्यंत सुखपूर्वक व्यतीत हुआ। यही नहीं जब तक वह जीवित रही नेपोलियन अक्सर उससे मिलने जाता रहा।

-प्रस्तुति : पिंकी जैन

सुख-समृद्धि के लिए दिशाओं के अनुरूप बनाएं भवन

वास्तु का अर्थ है वास करने का स्थान। जीवनचर्या की तमाम क्रियाएं किस दिशा से संबंधित होकर करनी चाहिए इसी का ज्ञान इस शास्त्र में विशेष रूप से बताया गया है। भूमि, जल प्रकाश, वायु तथा आकांश नामक महापंच भूतों के समन्वय संबंधी नियमों की सूत्रीकरण किया ऋषि-मुनियों ने। पूर्व दिशा के परिणाम बच्चों को प्रभावित करते हैं। जिन भवनों में पूर्व और उत्तर में खाली स्थान छोड़ा जाता है, उनके निवासी समृद्ध ओर निरोगी रहते हैं। मकान के उत्तर और पूर्व काा स्थल दूर से ही उनके निवासियों के जीवन स्तर की गाथा स्वयं स्पष्ट कर देते हैं। पंडित दयानंद शास्त्री कहते हैं कि वास्तुशास्त्र परोक्ष रूप से प्रकृति के नियमों का अनुसरण करता है, जो मानव को पंच तत्वों में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। सृष्टि की रचना पंच तत्वों से हुई है, जो कि वायु, अग्नि, जल, आकाश एवं पृथ्वी हैं। यह तत्व एक निश्चित रूप में पाये जाते हैं। यदि इन पंच तत्वों के गुणधर्म को समझकर निर्माण किया जाए तो वास्तु संबंधी अनेक समस्याओं का सहज समाधान संभव हो जाएगा।

जिसका घर का मेन गेट दक्षिण-पश्चिम में होता है नैऋत्य भूखंड कहलाता है। चूंकि नैऋत्य दिशा का महत्व वास्तु शास्त्र में ईशान के समक्ष है अतएव ऐसे प्रमाण पर वास्तु निर्माण का कार्य विशेष सावधानी से ही करना चाहिये। ऐसे भूखंडों का मुख्य प्रभाव परिवार प्रमुख उसकी सहधर्मिणी एवं ज्येष्ठ पुत्र पर परिलक्षित होता है। ऐसे भूखंडों में इन विशिष्ट सावधानियों को रखना भू-स्वामी के लिये लाभदायक होता है, अन्यथा मृत्यु तुल्य आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

नैऋत्य कोण हमेशा भरा रहना

चाहिए। इस प्रकार के भूखंडों के चारों तरफ खुली जगह रहना उत्तम है।

यदि नैऋत्य दिशा में बिना मूल्य के भी भूखंड मिलता है तो नहीं लेना चाहिये। यह महाअशुभ है।

नैऋत्य कोण में रसोई होगी तो पति-पत्नी में नित्य कलह होगा। स्त्री को गर्मी की शिकायत, गैस्ट्रिक ट्रबल, हमेशा घर में क्लेश रहेगा और जीवन नीरस रहेगा।

नैऋत्य दिशा में शयनकक्ष सबसे शुभ है, परंतु नैऋत्य दिशा में सोने वाला आलसी हो जाता है और उसे आराम की तलब रहेगी। इसका समाधान यह है कि सोते समय अपने सिर के पीछे लाल बल्ब लगाये और ध्यान रखे कि उस बल्ब की रोशनी अपने मुख पर नहीं आनी चाहिए।

नैऋत्य कोण बढ़ जाने पर मकान मालिक जीवन में कभी भी उन्नति नहीं करेगा, दूसरी औरत भी ला सकता है एवं अश्लील हरकते करेगा।

यदि नैऋत्य कोण में खाली स्थान है तो जन्मकुंडली में राहु अकेला है। गृहस्वामी का खजाना खाली रहेगा। दक्षिण में उत्तर की अपेक्षा अधिक रिक्त स्थान छोड़ना महिलाओं के लिये अशुभ होता है तथा अकाल मृत्यु आदि की आशंका का कारण है, जबकि पश्चिम में पूर्व की अपेक्षा अधिक रिक्त स्थान छोड़ना पुरुषों को ऐसा की फल देता है। कालांतर में ऐसे मकानों के निर्माणकर्ता मकान का उपयोग नहीं कर पाते।

नैऋत्य दिशा में यदि कुआं है, जो राहू-चंद्रमा की युति का प्रभाव है। गृहस्वामी अकारण भयग्रस्त रहेगा एवं मानसिक तनाव से पीड़ित होगा। इससे मकान मालिक की उम्र घटेगी एवं टोटके लगते ही रहेंगे और मालिक कर्जदार रहेगा।

यदि भवन पुराना है, नैऋत्य दिशा में टूटी हुई दीवार या दरार है, वहीं कुआं है तो भवन में कोई-न-कोई व्यक्ति प्रेतबाधा से पीड़ित होगा। व्यक्ति की जन्मकुंडली में राहू बिगड़ा हुआ होगा।

ऐसे तेज होगी याददाश्त

• 4 से 5 बादाम रात को पानी में भिगो दें। बारीक पीस कर पेस्ट बना लें। एक गिलास दूध में बादाम का पेस्ट और 3 चम्मच शहद डालें। यह मिश्रण पीने के बाद दो घंटे तक कुछ न खाएं।

• एक केले को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करें। केले में मौजूद पोषक तत्व बच्चों की याददाश्त की क्षमता बढ़ाते हैं, यह दिमाग को तंदुरुस्त रखते हैं। इससे ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है। केला शरीर में पानी की आपूर्ति भी करता है।

स्वास्थ्य के लिए गुणकारी है पुदीना

पुदीना के पत्ते दिखने में खूबसूरत तथा आंखों को ठंडक देने वाले होते हैं। इन पत्तों का नियमित सेवन सेहत के लिए बहुत हितकारी होता है। पुदीना को उच्च एंटी ऑक्सीडेंट, विटामिनों व खनिज लवणों से भरपूर खाद्य पदार्थ माना जाता है इसमें प्रज्जवलन व अल्सर विरोधी तत्व पाए जाते हैं, इसलिए एलर्जी होने की स्थिति में भी पुदीने के प्रयोग की सलाह दी जाती है इसके प्रयोग से खाने में कैलोरी, नमक अथवा शक्कर नहीं बढ़ती। अपच व गैस की स्थिति में पेट दर्द होने पर 1/4 कप पुदीना पत्तों का रस, जरा सा काला नमक व 1/2 नींबू का रस मिलाकर उसे सात बार उलट-पलट करके पीने से तत्काल आराम मिलता है। ताजा पत्ते न मिलने की स्थिति में सूखे पुदीना का पाउडर व सम भाग चीनी मिलाकर ताजे पानी से सेवन भी बहुत आराम देता है। दस्त, उल्टी, हैजा आदि की स्थिति में भी ताजे पुदीना का रस पिलाया जाता है। पुदीना गैस्ट्रोइंटरस्टिनॉल क्रियाएं भी दुरस्त करता है। पुदीना हृदय की जलन को शांत करता है। यह पित्त की पथरी को गलने में भी सहायक होता है। पुदीना हमारे शरीर में आने वाले विषाणु जैसे की मम्प्स, गलगंड, इन्फ्लूंजा-ए, हर्पीज आदि की वृद्धि को घटाता है। यह कब्ज व दस्त, दोनों को ही नियंत्रित करता है। आंतों की मांसपेशियों का संकुचन को भी नियंत्रित करता है।

खांसी, जुकाम, बलगम, बुखार आदि की स्थिति में पुदीना, काली मिर्च की चाय बनाकर नमक डाल कर सेवन करने से लाभ मिलता है। पुदीना की चाय जीभ साफ करने के लिए भी इस्तेमाल की जाती है। पुदीना का तेल त्वचा पर लगाने से यह पैन किलर का काम करता है। पुदीना मुख स्वास्थ्य के लिए प्रयोग में लाया जाता है। पुदीना की पत्तों का लेप चेहरे के दाग-धब्बों को साफ करने की लिए भी किया जाता है।

इसका प्रयोग शरीर से विजातीय पदार्थों को निकलने की लिए भी किया जाता है। इसके लिए एक कांच की जग में डेढ़ लीटर पानी में एक नींबू पतले-पतले, गोल टुकड़ों में काटें व साथ ही एक मुट्ठी भर कर पुदीना की पत्ते लें। इन दोनों को पानी में 2 से 3 घंटे तक की लिए छोड़ दें। फिर दिन भर इस जायके व गुणों से भरपूर पानी का इस्तेमाल करें। आप स्वयं पाएंगे कि शरीर से विजातीय पदार्थ बाहर निकल गए हैं। ध्यान रखें इसका प्रयोग एक निर्धारित मात्रा में ही करें।

-योगी अरुण तिवारी

मासिक राशि भविष्यफल-अगस्त 2017

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफलदायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टिदायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्माण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला हैं कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। कुछ जातक कोई नया कार्य शुरू कर सकते हैं तो कुछ जातकों की पदोन्नति संभव है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा-जाही लगी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएं पूरी होने की खुशी होगी। कुछ जातकों के यहां कोई अनुष्ठान आदि पूरा हो सकता है।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रमसाध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फलदायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी-मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं में शामिल होंगे।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का प्रारंभ तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों के लंबित पड़े भूमि-भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवारजनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा। कोई महत्वपूर्ण सूचना भी आपको इस माह खुशी दे सकती है।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा, किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता-आता पैसा रूक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेंगी। मानसिक चिंता बनेगी।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़ें। इन जातकों के भूमि-भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें। आप नई योजनाओं में शामिल होंगे।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी, किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक यात्रा तो करें पर इस माह पहाड़ी यात्रा न करें।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्भ तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा। मानसिक चिंता बनी रहेगी। कोई अकारण विवाद भी हो सकता है। हाथ में पैसा आता रूक जाएगा।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफलदायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं। वाहन सावधानी से चलाएं।

-इति शुभम्

भौतिकता की आंधी में अध्यात्म का दीप बुझने न पाए

19वें द्विवर्षीय जैना कन्वेंशन, न्यूजर्सी में पूज्य आचार्यश्री का उद्‌बोधन

30 जून से चार जुलाई 2017 पंच दिवसीय जैना कन्वेंशन में उपस्थित लगभग पांच हजार जन-मेदिनी को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी ने कहा- आप जिस देश में हैं वहां भौतिक सुख-संसाधनों की पराकाष्ठा है। आप जिस देश से यहां आप हैं उस देश के पास एक समृद्ध आध्यात्मिक विरासत है। मेरा आपसे यही कहना है भौतिकता की इस प्रचंड आंधी में कहीं अध्यात्म का दीप बुझने न पाए, इसके लिए विशेषतः जागरूकता जरूरी है। जिस विज्ञान ने सुख-समृद्धि के नाम पर पूरे मानव-समाज को अपने आगोश में ले लिया है, आध्यात्मिक सोच के अभाव में उसका परिणाम महाविनाश ही होना है-

बसर में जैसे-जैसे बन्दगी कम होती जाती है
चिरागे-जिन्दगी में रोशनी कम होती जाती है
यह इन्सान जबसे चांद की धरती पे पहुंचा है
न जाने क्यों जमीं पे चांदनी कम होती जाती है

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच आपने कहा- लोग पूछते हैं शास्त्रों में वर्णित देव-दानवों का अस्तित्व क्या सचमुच है?मेरा उत्तर होता है देवताओं को तो खोजना पड़ेगा। लेकिन दानवों की संख्या तो दिन-दिन इस धरती पर बढ़ती जा रही है-

आदमी अब जानवर की क्रूरतम भाषा बना है
भस्म करने विश्व को वह आज दुर्वासा बना है
क्या जरूरत दानवों की, मारने इन्सान को जब
आदमी ही आदमी के खून का प्यास बना है।

आपने कहा- विज्ञान स्वयं यह उद्‌घोषणा कर रहा है हमारी प्रकृति-विरूद्ध जीवन-शैली के कारण हम महाविनाश की ओर बढ़ रहे हैं। इसके महाविनाश का कारण केवल आदमी की निरंकुश सुख-लिप्सा एवं अधिनायकवादी महत्त्वकांक्षाएं हैं। आदमी देवता न भी बने, आदमी ही बन जाएं, तो भी महाविनाश टल सकता है।

देवता बनिये भले ही मत किसी के वास्ते
आदमी बन जाइए बस आदमी के वास्ते।

इसके लिए इस भौतिकता की आंधी में अध्यात्म के दीप को बुझने से बचाना होगा। इससे पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदियां-पर्वत तथा पूरा पर्यावरण स्वयं बच जाएगा, जीवनदायी बना रहेगा।

आइए इसको बचालें आंधियों से आज हम
एक दीपक भी बहुत है रोशनी के वास्ते।

इस कन्वेंशन में चार प्रवचन पूज्य गुरूदेव के हुए, जिनकी गूंज हजारों की संख्या में उपस्थित जन-समुदाय में सर्वत्र

सुनी जा सकती थी। इसी प्रकार आपके शिष्य योगी अरूण तिवारी के चार योगा-सेशन हुए। योगी अरूण के विलक्षण योग-प्रशिक्षण का इतना प्रभाव था कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के कारण देर रात में सोने वाले भी सबेरे-सबेरे 6.30 बजे योगाभ्यास के लिए पहुंच जाते थे, योगा-हाल भी छोटा पड़ जाता था। उल्लेखनीय है नॉर्थ अमेरिका में बसने वाले करीब डेढ़ लाख जैनियों की प्रतिनिधि संस्था The Federation of Jain Centres of North America (Jaina) है जिसमें बिना किसी संप्रदाय-गत भेदभाव के समस्त जैन समाज भाग लेता है। काश! ऐसा ही कोई जैन संगठन भारत में भी खड़ा हो पाता। इस कान्वेंशन को अनेक संत-विभूतियों तथा विद्वानों ने संबोधित किया।

<u>भारत से प्रस्थान</u>

26-27 जून, 2017 की मध्य रात्रि में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा शिष्य योगी अरूण ने जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन नई दिल्ली से मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों तथा साध्वी समुदाय के साथ पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी से विदाई ली। मानव मंदिर, नई दिल्ली से न्यूजर्सी, अमेरिका, लिविंग्स्टन शहर में अत्यंत श्रद्धाशील श्री हेमेन्द्र भाई दक्षाबेन पटेल के आवास तक लगभग चौबीस घंटों की यात्रा की थकान का असर शरीर पर आ जाना स्वाभविक है। इसे देखकर अब विदेश-यात्राओं से विराम लेने का भी मन होता है। किंतु यहां की असांप्रदायिक भावात्मक एकता, मंगल प्रवचनों तथा योग-विद्या के प्रति तीव्र उत्कंठा तथा उन्मुक्त धर्म-प्रभावना को देखकर विदेश-यात्रा का कार्यक्रम बन ही जाता है। मानव मंदिर गुरूकुल की अवधारणा (Concept) का भी जन-मानस पर गहरा प्रभाव है। श्री हेमेन्द्र भाई दक्षा बेन पटेल परिवार पूज्यवर के साथ सन् 1999 की धर्म-प्रसार यात्रा के समय से पूरे श्रद्धा-भाव से जुड़ा है। उनके सुखद आवास पर तीन दिन के विश्राम से यात्रा की सारी थकान दूर हो जाती है। एडिशन शहर में होने वाला जैना कन्वेंशन स्थल यहां से केवल चालीस मिनट की दूरी पर है, जहां पूज्यवर 30 जून, मध्यान्ह Blessing Ceremony में भाग लेने के लिए पधार जाते हैं।

चार जुलाई, जैना कन्वेंशन के समापन के पश्चात इन्टरनेशनल महावीर जैन मिशन के युवा ट्रष्टी श्री जितेन्द्र कोठारी के साथ लगभग डेढ घंटे की दूरी पर स्थित सिद्धाचलम् तीर्थ-परिक्रमा के लिए पूज्य आचार्यश्री पधार जाते हैं। श्री सम्मेद शिखर तीर्थ, झारखंड की रचना (Replica) तथा श्री भौमियाजी देव-प्रतिष्ठा के पश्चात् यहां आने वाले तीर्थ-यात्रियों का तांता विशेषतः अप्रैल से अक्टूबर तक लगा रहता है।

7-8-9 जुलाई का सप्ताहांत Englewood, New Jersey में श्री जितेन्द्र रूचि कोठारी के आवास पर होता है। एक प्रवचन श्री आनन्दजी नाहर के आवास पर तथा दूसरा प्रवचन श्री रमेशजी जैन के आवास पर होता है। दोनों ही प्रवचनों में जैन धर्म के अतीत, वर्तमान और भावी स्वरूप पर खुलकर चर्चाएं होती हैं। ऐसी जिज्ञासाओं/चर्चाओं का अपना अलग ही आनंद होता है।

12-17 जुलाई का पूज्यवर का प्रवास पूरे संसार में विश्व-विद्यालयों का प्रमुख केन्द्र बोस्टन महानगर में होता है, जहां 85 विश्व-विद्यालय शिक्षा-जगत में अपना अग्रणी स्थान बनाये हुए हैं। माना जाता है संसार के प्रमुख दो सौ विश्व-विद्यालयों में से करीब चालीस विश्व-विद्यालय अकेले बोस्टन शहर से है। जबकि भारत में केवल एक विश्व-विद्यालय का नाम उनमें शुमार होता है। उत्तरी बोस्टन के बर्लिंग्टन सिटी सेंटर के सत्संग-भवन हाल में योगी अरूण की दो-दिवसीय प्रभावी योग-कक्षाएं होती हैं। चार-दिवसीय प्रवचन तथा योग कक्षाएं दक्षिण बोस्टन के Norwood शहर के जैन सेंटर में आयोजित होते हैं। समाज की तीव्र अभिलाषा है अगले वर्ष बड़े स्तर पर पूज्य गुरूदेव के प्रवचन तथा योग-कक्षाओं का आयोजन हो। बोस्टन प्रवास को सफल बनाने में श्री विजय अपर्णा शाह, श्री रतन तारा सिंघवी, श्री आशीष तान्या जैन, श्री कुलभूषण रानी जैन, श्री विनय लक्ष्मी जैन तथा श्री रसिक कल्पना बागडिया आदि का विशेष योग-दान रहता है। बच्चों के बीच योग-विद्या के प्रसार के लिए श्री योगेन प्रीति जैन ने योग डोक्यूमेंटरी पर कार्य आरंभ कर दिया है।

18 जुलाई से 23 जुलाई के न्यूयार्क प्रवास में हर वर्ष की तरह पूज्य गुरूदेव के प्रवचन तथा शिष्य योगी अरूण योगा-कार्यक्रम रहते हैं। सबका सोचना है मानव मंदिर मिशन का अमेरिका में स्थायी केन्द्र होने से बहुत कार्य हो सकता है। ई-मेल द्वारा योग-शिविर के लिए जिज्ञासु व्यक्तियों के पत्र इसके जीवंत प्रमाण है।

(क्रमशः)

जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में सहयोगी साध्वियों द्वारा मानव मंदिर गुरूकुल तथा सेवाधाम हॉस्पिटल की सभी प्रवृत्तियां सुचारू रूप से चल रही हैं। पूज्या महासती मंजुलाश्री जी के 83वें वर्ष प्रवेश को बड़े हर्ष-उल्लास के साथ 7 जुलाई 2017 को ध्यान मंदिर हाल में मनाया गया। गुरूकुल के बच्चों, साध्वी-समुदाय, स्टाफ के सदस्यों तथा दिल्ली-समाज ने पूज्या साध्वी के प्रति अपनी विनयांजिलि प्रस्तुत की। गुरूदेव ने अमेरिका से अपने संदेश में कहा- आप आरोग्यपूर्वक चिरायु हों, शतायु हों, योगी अरूण ने निवेदन किया आपका स्वस्थ सान्निध्य हमें दीर्घ समय तक मिलता रहे।

-शिक्षा के लिए विश्व भर में कीर्तिमान स्थापित करने वाले अमेरिका के विश्व-विद्यालय नगरी बोस्टन में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज व योगी अरुण के साथ हैं नार्वुड जैन सेंटर के पदाधिकारी गण।

-नार्वुड जैन सेंटर में योगी अरुण योग सिखाते हुए।

-पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी के 83वें वर्ष प्रवेश पर गुरुकुल की बालिकाएँ अभिवंदना गीत गाते हुए। साथ में हैं साध्वी कनकलता जी एवं साध्वी वसुमती जी।

-19वें जैना अधिवेशन में विशेष सत्र को सम्बोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज। साथ में हैं योगी अरुण।

-पूज्य गुरुदेव के विशेष सत्र के प्रवचन को आनंद विभोर हो कर सुनते अमेरिका वासी, न्यूजर्सी अमेरिका।

-19वें जैना अधिवेशन में योग के विशेष सत्र में योग-ध्यान के विशेष प्रयोग करवाते हुए योगी अरुण जी, न्यूजर्सी, अमेरिका।

-19वें जैना अधिवेशन में भाग लेते हुए (दाँयें से) साध्वी चंदना जी, अमरेन्द्र मुनि जी, लोकेश मुनि जी, पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी, श्रुतप्रज्ञ जी, योगी अरुण जी, तेज साहेब व आदि साधु-साध्वियाँ।

-जैना अधिवेशन के मुख्य समारोह को सम्बोधित करते पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज व योगी अरुण तिवारी।

-19वें जैना अधिवेशन में पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों को बड़ी तन्मयता से सुनते हुए विशाल जन-समुदाय।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus

Since 1994

.....The Wellness Center

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-2682 1348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया